विद्या आश्रम न्यास (आश्रम समिति) की बैठक

5 फरवरी 2017

कमरा नम्बर 404, विधायक निवास , सिविल लाइंस, नागपुर

उपस्थित सदस्य : सुनील सहस्रबुद्धे, चित्रा सहस्रबुद्धे, दिलीप कुमार 'दिली', लक्ष्मण प्रसाद, मो. अलीम, ज. क. सुरेश, अमित बसोले, बी. कृष्णराजुलु, अभिजीत मित्रा, नरेश शर्मा, गिरीश सहस्रबुद्धे, अवधेश कुमार, अविनाश झा।

आमंत्रित सदस्य : जी. शिवराम कृष्णन, विजय जावंधिया, नीरजा सहस्रबुद्धे, संजीव कीर्तने, शिवम् ।

बैठक की कार्यवाही

बैठक की शुरूआत देश और दुनिया के घटनाक्रमों और ज्वलंत समस्याओं पर चर्चा के साथ हुई। अमेरिका, इंग्लैण्ड़ और भारत के राजनितिक घटनाक्रमों का संदर्भ लेते हुए दुनियाभर में बढ़ रही आक्रामक और दबंगई की राजनीति चर्चा के केन्द्र में रही। यह महसूस किया गया कि तथाकथित प्रगतिशील ताकतें इससे मुकाबला नही कर पा रही हैं। यह भी विचार आया कि इन दोनो की सामाजिक नीतियों में अंतर के बावजूद आर्थिक नीतियों में कोई फर्क नही है। लोक पक्ष मजबूत हो इसके लिये यह जरूरी है कि लोकविद्या को संगठन और शक्ति के स्रोत के रूप में पहचाना जाये। दक्षिण अमेरिका की जो हलचल इन परिस्थितियों को चुनौती देती प्रतीत हो रही थीं, कुछ वर्षों से दब गई मालूम पड़ती है। लेकिन ज्ञान क्षेत्र में भी यह चुनौती आकार ले रही थी जिसके अन्य तरीकों से विस्तार की उम्मीद की जा सकती है। ज्ञान के क्षेत्र में बुनियादी दखल के बगैर अब लोक पक्ष की कोई भी बात सिलसिलेवार ढंग से शायद नही की जा सकती। विद्या आश्रम को पूरी एकाग्रता के साथ लोकविद्या विचार को आगे बढ़ाना चाहिये तथा लोक पक्ष को मज़बूती के साथ नये अंदाज़ में सामने लाना चाहिये।

1. **आश्रम समिति के नए सदस्य :** आश्रम समिति के सदस्यों विनीश गुप्ता (28 /07 /16), विजय कुंदाजी (19 /12 /16) और कवि महेश (28/10 /16) ने मेल लिखकर यह सूचित किया है कि वे आश्रम समिति की सदस्यता से मुक्त होना चाहते हैं। यह समिति के सामने रखा गया और समिति ने सर्व सम्मति से यह स्वीकार किया । टी. नारायण राव, ललित कुमार कौल, जी. शिवराम कृष्णन, संजीव कीर्तने और एहसान अली के नाम समिति की सदस्यता के लिए प्रस्तावित हुए। टी. नारायण राव, ललित कुमार कौल, जी. शिवराम कृष्णन और एहसान अली ने इसे स्वीकृति दी तथा सर्व सम्मति से वे आश्रम समिति के सदस्य बनाये गए। संजीव कीर्तने समिति में शामिल होने के पक्ष में नहीं थे। उनसे और बात करने का तय हुआ।
2. **आश्रम समिति के नये पदाधिकारियों का चयन और कार्यकारिणी समिति का गठन:** 1 अप्रैल 2017 से अगले तीन वर्षों के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए –

अध्यक्ष– सुनील सहस्रबुद्धे**, समन्वयक**– चित्रा सहस्रबुद्धे **, कोषाध्यक्ष**– प्रेमलता सिंह। **कार्यकारिणी समिति**– चित्रा सहस्रबुद्धे, लक्ष्मण प्रसाद, प्रेमलता सिंह, एहसान अली, अविनाश झा, गिरीश सहस्रबुद्धे, बी. कृष्णराजुलु, अवधेश कुमार, ज. क. सुरेश।

3. **विद्या आश्रम न्यासपत्र में संशोधन :** यह स्पष्ट किया गया कि विद्या आश्रम न्यास समिति और आश्रम समिति एक ही हैं। संशोधनों का एक प्रस्ताव बनाने के लिए 27 फरवरी 2016 की आश्रम समिति बैठक में कृष्णराजुलु, नारायण राव, ललित कुमार कौल की एक समिति बनाई गई थी जिसका कोई प्रस्ताव सामने नहीं आया। इस समिति में नरेश कुमार शर्मा को जोड़ा गया और अपेक्षा व्यक्त की गई कि जल्द ही प्रस्ताव बनकर आएगा। इस समिति के संयोजक बी.कृष्णराजुलु होंगे।
4. **वितरित व्यवस्था :** विद्या आश्रम के सांगठनिक ढांचे के नवीनीकरण के लिए 27 फरवरी 2016 की आश्रम समिति बैठक में कृष्णराजुलु के संयोजन में एक समिति बनाई गई थी। इस समिति ने कोई प्रस्ताव नहीं बनाया। **इसलिये इस समिति को पुनर्संगठित किया गया और अपेक्षा की गई कि जल्द ही एक प्रस्ताव सामने आयेगा। अब यह समिति होगी**– सुरेश (संयोजक), कृष्णराजुलु, गिरीश और अमित।
5. **लोकविद्या जन आन्दोलन**– समिति ने लोकविद्या जन आन्दोलन के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की। अपने प्रमुख बिन्दु लोकविद्या समाज के परिवारों में वही आय होनी चाहिये जो एक सरकारी कर्मचारी की होती है के अलावा ज्ञान पंचायत, लोकविद्या बाजार, लोकविद्या स्वराज और लोकविद्या कला–दर्शन पर चर्चा हुई। दलित व मुसलमान समाजों के साथ ज्ञान वार्ता को विकसित करने से जुड़ी संभावनाओं पर चर्चा की गई। किसानों, कारीगरों, आदिवासियों, महिलाओं तथा छोटे दुकानदारों की पहल और नेतृत्व के प्रश्नों पर बातचीत हुई। पहले से चल रही बातचीत को आगे बढ़ाते हुए **संजीव ने पहल और कार्यक्रम की एक योजना समिति के सामने रखी। यह बात उभरकर आई कि इस ज्ञान आन्दोलन में विद्या आश्रम की भूमिका ज्ञान पंचायतें बनाने और उन्हें सक्रिय करने की है। इस दृष्टि से निम्नलिखित सहमति बनी।**

- **वाराणसी** – चित्राजी ने बताया कि वाराणसी में पहल का स्थान विद्या आश्रम का सारनाथ परिसर है। प्रमुख मुद्दों जैसे लोकविद्या समाज के परिवारों में वही आय होनी चाहिये जो एक सरकारी कर्मचारी की होती है, लोकविद्या समाज के बीच एकता, समाज में ज्ञान, कला और दर्शन के संदर्भ लेते हुए यहां से पहल ली जाती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में लोकविद्या समाजों के बीच सम्पर्क है और उनके संगठनों के सहयोग से ज्ञान पंचायतें आयोजित की जाती हैं। पिछले दो वर्षों से एक किसान कारीगर महापंचायत का आयोजन किया जा रहा है। लक्ष्मण प्रसाद किसान आन्दोलन में सक्रिय हैं, उनकी पहल पर सलारपुर गांव में वाराणसी ज्ञान पंचायत की रचना की गई है। प्रेमलताजी और एहसान अली वाराणसी के कारीगर समाजों के बीच कारीगर नजरिया पर केन्द्रित ज्ञान वार्ता जारी रखते हैं। दिलीप विभिन्न क्षेत्रों में जाकर लोकविद्या सत्संग और ज्ञान पंचायतों के मार्फत इस ज्ञान आन्दोलन को विस्तार देते हैं। विद्या आश्रम कला, दर्शन, समाज, स्वराज व लोकविद्या पर चिंतन का स्थान है तथा यहां स्थानीय एवं इन्टरनेट पर सम्बन्धित ज्ञान वार्तायें चलाई जाती हैं। विद्या आश्रम के सभी सदस्य समय–समय पर इनमें भागीदार होते हैं।

- **सिंगरौली**– अवधेश ने सिंगरौली में आदिवासी और छोटे दुकानदारों की पहल से ज्ञान पंचायत जैसा एक स्थान बनाने की बात रखी। इन स्थानों को बनाने के लिए लोकविद्या समन्वय समूह, किसान-कारीगर पंचायत या किन्ही अन्य सांगठनिक संरचनाओं को गढ़ा जा सकता है।
- **इंदौर**– संजीव की पहल पर एक लोकविद्या समन्वय समूह बना है जिसने **इंदौर** के मिल क्षेत्र में शिवाजी नगर के बुधवारिया हाट में एक ज्ञान पंचायत बनाई है। लोकविद्या बाजार और छोटे दुकानदारों की आय बढ़े इसके रास्ते खोजे जाते हैं। **विचार यह है कि सब छोटे–छोटे दुकानदार लोकविद्या समाज के अभिन्न अंग हैं इसलिये उनकी भी वही आय होनी चाहिये जो एक सरकारी कर्मचारी की होती है। सुदामा नगर में कला ज्ञान पंचायत के नाम से एक स्थान बनाया जायेगा जहाँ से लोकविद्या दृष्टिकोण से कला और कलाकारों के ज्ञान आंदोलन को व्यापक समाज में फ़ैलाने का कार्य होगा।** विद्या आश्रम के सदस्यों की भागीदारी भी है।
- **औरंगाबाद– संजीव की पहल पर औरंगाबाद में** छोटे उद्यमियों की ज्ञान पंचायतें की गईं हैं। यहां लोकविद्या समन्वय समूह बनाकर **स्त्रियों के नेतृत्व में स्त्री-दृष्टि की प्रधानता में लोकविद्या समाज में एकता का स्थान बनाने की क्रियाएं शुरू हो चुकी हैं।** दलित नेतृत्व के सामने लोकविद्या दृष्टिकोण रखा जा रहा है। संवाद जारी है। पास में वैजापुर में कलाकारों की एक बड़ी ज्ञान पंचायत की तैयारी चल रही है। विद्या आश्रम के सदस्यों की भागीदारी भी है, विशेषकर गिरीश की।
- **हैदराबाद**– **कृष्णराजुलु ने हैदराबाद में लोकविद्या बाजार के विचार से छोटे व्यापारियों की पहल से एक** ज्ञान पंचायत बनाने की बात कही। लोकविद्या बाजार की दृष्टि से इन्दौर और औरंगाबाद में हैदराबाद के सक्रिय सदस्यों की भागीदारी रहेगी। लोकविद्या बाजार के नाम से एक पुस्तिका तैयार की जायेगी।
- **बंगलुरु**– एक बंगलुरु ज्ञान पंचायत के निर्माण पर विचार किया जायेगा। यहां से ज्ञान और समाज, ज्ञान और न्याय, ज्ञान और नैतिकता, ज्ञान और सत्ता जैसे विषयों पर तथा लोकविद्या दृष्टि से ज्ञान के दर्शन पर चिंतन और चर्चा होंगी। शिवराम कृष्णन और सुरेश ने कहा कि इन विषयों के साथ जोड़कर दलित समाज और उनके नेतृत्व के साथ वार्ता के लिये संगोष्ठी आयोजित की जायेगी।
- **नागपुर**– गिरीश कुछ महीनों में वहां के लिये प्रस्ताव सामने रखेंगे।
- **कोलकाता**– जितेन नंदी और उनके समूह के साथ वार्ता जारी रहेगी। अभिजीत मित्रा और अमित उनके साथ वहां लोकविद्या पहल के स्वरूप बनायेंगे।
- **सूरत**– एहसान अली, संजीव और अमित सूरत में ज्ञान पंचायत के रास्ते खोजेंगे।
- **घुमंतु समिति**– ज्ञान पंचायतों के विस्तार और विभिन्न स्थानों पर सारगर्भित चर्चाओं के लिये एक घुमंतु समिति बनाई गई। इस समिति में अमित, गिरीश, सुरेश और संजीव हैं। संजीव और अमित इसके संयोजन का काम करेंगे।
- संजीव ने सुझाव दिया कि **ज्ञान पंचायतें हर अमावस्या और पूर्णिमा को आयोजित करने की कोशिश होनी चाहिए ताकि देश के अलग-अलग हिस्सों में एक ही दिन कई ज्ञान पंचायतें होंगी तो परिणाम प्रभावी होगा।**

- इन ज्ञान पंचायतों के लिए शुरूआती संसाधन जुटाने पर बात हुई और विद्या आश्रम इसके लिये एक बजट का प्रावधान करे इसकी सहमति बनी। संजीव और अमित मिलकर इसका एक ब्यौरा बनाएंगे।

6. **प्रकाषन–** इन ज्ञान-पंचायतों में वार्ता को सक्रिय करने के लिए लघु पत्रिका/अख़बार के प्रकाशन होने चाहिए। ये अख़बार स्थानीय भाषा में हो। इसके आलावा लोकविद्या स्वराज, लोकविद्या बाजार, ज्ञान पंचायत, लोकविद्या आर्थिकी, लोकविद्या मुद्रा, लोकविद्या कलादृष्टि आदि पर बने ड्राफ्ट लेखनों को अंतिम रूप देकर छोटी पुस्तिकाएं प्रकाशित की जानी चाहिए। इसके लिए अनुवाद और प्रकाशन की एक समिति की ज़रूरत को रेखांकित किया गया।

7. **वित्त–**

- **वर्ष 2015 - 16 की ऑडिट रिपोर्ट पेश** हुई तथा उसका अनुमोदन किया गया।
- **वित्त समिति का गठन हुआ। वित्त समिति –** आश्रम समन्वयक चित्राजी और कोषाध्यक्ष प्रेमलताजी के साथ **अमित, नारायण राव और नरेश शर्मा** को शामिल किया गया।
- **वित्त संग्रह को और अधिक समृद्ध करने के बारे में विचार हुआ।**

8. **विद्या आश्रम आवास :** आश्रम के सारनाथ परिसर पर आवास की व्यवस्थाओं को आश्रम समिति निर्धारित एवं नियंत्रित करती है। सुनील और चित्रा नवम्बर 2010 से आश्रम परिसर में रहते हैं। इसकी अनुमति आश्रम समिति समय–समय पर नवीनीकृत करती है। पिछली बार जनवरी 2014 की मूलताई बैठक में तीन साल के लिये यह नवीनीकरण किया गया था। समिति में यह विचार हुआ कि बार–बार ऐसे नवीनीकरण की आवश्यकता नही होनी चाहिये तथा सर्वसहमति से यह तय किया गया कि वे वहां रहना तब तक जारी रखें जब तक आश्रम समिति इस सम्बन्ध में कोई और निर्णय नही लेती है।

9. अंत में अध्यक्ष सुनील सहस्रबुद्धे ने सभी सदस्यों से यह आग्रह किया कि वे और अधिक समय विद्या आश्रम के लिये दिया करें। अन्य कार्यों के साथ सारनाथ परिसर पर समय देने का मन बनायें, एक ही समय 5 दिन या उससे अधिक अवधि के लिये वहां रहने के लिये आयें।

●